E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
IJAAS 2019; 1(1): 203-206
Received: 02-05-2019
Accepted: 09-06-2019

प्रशांत कुमार
बिजुली, सदर, दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
प्रशांत कुमार
बिजुली, सदर, दरभंगा, बिहार, भारत

प्रेम का स्वरूप और कालिदास

प्रशांत कुमार

सारांश
भारत अथवा अन्य राष्ट्र में प्रेम को सर्वाधिक अध्ययन किया जाता है, ऐसा प्रमाण हमें उपलब्ध नहीं होता। यद्यपि वैदिक संहिताओं में प्रेम–सूक्त या किसी अन्य नाम से भी एतद् विषयक सूक्त प्राप्त नहीं होता। तथापि, उनमें प्रेम विषयक अनेक शब्दों का प्रयोग किया गया है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि वैदिक युग में युग के विभिन्न स्वरूपों की भाव–भंगिमाओं वर्णन किया गया है। जिसे यह प्रतीत होता है कि ज्ञान उस समय के समाज को अवश्य उपलब्ध था। ऋग्वेद में भी प्रयुक्त प्रेम सौन्दर्य के पर्यायवाची शब्दों का उल्लेख किया गया है, जिसे जर्मन विद्वानों–ओल्डेन वर्ग एवं पिशेल ने एक संकलन में इस प्रकार बतया है। यथा–श्री, वयुः, पेश्स, अप्सस, श्रियः, वल्गुः, भद्र, प्रिय, रूपि, लावण्य इत्यादी। ऋग्वेद ऋषि स्वंय की आन्तरिक प्रेरणाओं से शासित होकर प्रेम के सौन्दर्य–स्वरूप को अभिव्यक्त किया गया है। दर्शन एवं उसकी अभिव्यक्ति करते थे।

प्रस्तावना
'संक्षेप में वेदकाल की धार्मिक दृष्टि प्रेममय जीवन में विराट् की अनुभूति के स्वरूप उत्पन्न करती है। यह अनुभूति परम आनन्द देने वाली होती है, अतएव यह प्रेम सौन्दर्य की अनूभूति होती है। प्रेम सौन्दर्य की इस अनुभूति से हमारा अनुभव रूपान्तरित होता है और प्रत्येक वस्तु में दिव्यता और आध्यात्मिकता का आविर्भाव होता है–भारतीय प्रेम सौन्दर्य चेतना में यह आध्यात्मिक दृष्टि से वैदिक काल की देन है।' [1]
वैदिक कवियों की प्रेम सौन्दर्य भावना का उद्घाटन मुख्यतः उषस्–सूक्तों में हुआ है। मानवीय प्रेम सौन्दर्य का चित्रण प्रायः वेदों में उपलब्ध नहीं है। प्रो0 मैकडॉनल का कथन है कि 'मेघदूत की रचना सबसे मनोरम कल्पना और संसार के किसी भी साहित्य में मेघ से अधिक आकर्षक चरित्र देखने को नहीं मिलता है। मेघ के स्वरूप की छटा पौरोहित्य की अटकलों से धूमिल नहीं हो सकी है और न ही उससे सम्बद्ध कल्पना यक्षीय संकेतों के द्वारा आच्छन्न हो पाया है।' [2]
कवि बोसके के अनुसार सौन्दर्य वह है, जिसमें चारित्र्य या वैशिष्ट्य मूलक प्रकाश रहता है। वह ऐन्द्रिय अथवा कल्पना रूप में प्रकाशित वस्तु धर्म है। उसे प्रकाशित होने के लिए कोई माध्यम चाहिए। अभिव्यक्त सौन्दर्य में सार्वजनीन अथवा अमूर्त्त व्यंजनात्मकता सन्निहित होती है–

> That which has characteristic or individual expressiveness for sense perception or imagination subject t the condition of general or abstract expressiveness in the same Medium [3]

वस्तुतः वस्तु का वाह्यरूप जब तक हमारी कल्पना अथवा इन्द्रिय संवेदन का विषय नहीं बन जाती, तब तक सौन्दर्य की अनुभूति संभव ही नहीं है। एतदर्थ संवेदना अथवा कल्पना दोनों में से एक का होना अपरिहार्य है प्रेम सौन्दर्य अनुभूति के लिए। सुन्दर स्वरूपक का अवलोकन करने के बाद भी यदि ज्ञानेन्द्रियों में कोई सुगबुगाहट नहीं होती, हृदय में कोई स्पन्दन नहीं होता तो वह व्यर्थ हैं वास्तव में वस्तु का स्वरूपज हमारी कल्पना में प्रवेश करता है, तो सौन्दर्य–उर्मियां तरंगित होने लगती हैं। कल्पना के अभाव में सौन्दर्य की अनुभूति नहीं की जा सकती।
महाकवि कालिदास की दृष्टि में प्रेम सौन्दर्य अनन्त चेतना के प्रवाह की तरंग मात्र ही नहीं है। वाणी और अर्थ की भांति चैतन्य एवं प्रेम सौन्दर्य एक है। चैतन्य के आनन्द सागर में सौन्दर्य की ऊर्मियां उठती रहती हैं। महाकवि कालिदास की प्रेम सौन्दर्य भावना समय मिलते ही प्रणय से आलिंगित हो जाती है। प्रकृति एवं मानव का प्रेम सौन्दर्य एक–दूसरे के हृदय में प्रेम की गति देता है। प्रेम सौन्दर्य आकर्षण की किरण है। नारी का सौन्दर्य एवं यौवन प्रेमी के चरणों में अर्पित होने के लिए, ही प्रेमी का पुरूषार्थ उसके प्रेमिका के रूपी–सौन्दर्य पर निछावर होने के लिए ही है। जैसे उर्वशी का विशिष्ट रूप पूरूरवा के उपभोग के लिए है उसी तरह पुरूरवा का विशिष्ट प्रेम उर्वशी के चरणों में समर्पित हो जाने के लिए। दुष्यन्त शकुन्तला का मिलन और विरह, यक्ष का उसकी प्रिया से संयोग और वियोग, कामदेव का दहन एवं पुनर्जीवन,

इन सभी व्यापारों के बीच कवि ने एक ही प्रेम–तत्त्व को देखा है। ग्रीष्म की उष्मा, वसंत की सुषमा और शरद् की निर्मलता में कलाकार कवि को समान रूप से प्रेम सौन्दर्य दिखाई पड़ता है। महाकवि कालिदास की दृष्टि में कला का संसार सतत् सुन्दर, सतत् अभिनव एवं शाश्वत मंगलमय है। महाकवि की दृष्टि में शिव और शक्ति, आनन्द एवं सुन्दरता सर्वत्र समान से परिव्याप्त है।

प्रेम सौन्दर्य के स्वरूप

प्रेम सौन्दर्य के दो स्वरूप प्राप्त है– (क) प्रकृति मूलक, (ख) कलामूलक

(क) प्रकृति मूलक – विश्व के अन्तर्गत दीख पड़ने वाले समस्त पदार्थ एवं व्यापार–जनित प्रेम प्रकृति मूलक हैं।

(ख) कलामूलक प्रेम – मनुष्य की व्यक्तिगत कल्पना एवं भावना जब किसी माध्यम से अभिव्यक्त हो वह प्रेम तत्व का रूप धारण करती है तो वह कलामूलक प्रेम कहलाती है।

प्रेम का अधिकष्ठान

इस संबंध में उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि प्रेम का अधिष्ठान क्या है? यहां दो प्रकार की विचारधारायें लक्षित होती हैं। साहित्य–जगत् में पहली विचारधारा प्रेम को विषयनिष्ठ (आब्जेक्टिव) या वस्तुनिष्ठ मानती है तो दूसरी विचारधारा प्रेम को विषयीनिष्ठ (सब्जेक्टिव) अर्थात् व्यक्तिनिष्ठ मानती है।

(क) वस्तुनिष्ठ प्रेम– वस्तुनिष्ठ प्रेम प्रेम उसे कहते हैं, जिसमें सुन्दरता की सत्ता वस्तु अथवा प्राणी में ही सन्निहित होती है अर्थात् प्रेम प्राणी अथवा वस्तु में ही समाहित होती है यानि सुन्दर वस्तु डर व्यक्ति को सुन्दर ही लगती है।

भारतीय चिंतन में प्रेम मूलतः ब्रहा की विमल ज्योति का ही प्रतिबिम्ब माना गया है। शिशुपालवध के प्रणेता माघ ने रैवतक पर्वत की शोभा का वर्णन करते हुए रमणीयता का परिभाषा देते हुए कहा है–

'क्षणे क्षणे यत्रवतामुपैति तदेव रूपं रमणीयतायाः।' [4]

यहां सौन्दर्य को वस्तुनिष्ठ स्वीकारते हुए कवि ने उसके अन्दर में प्रतिक्षण भासमान नवलता को ही रमणीयता के रूप में व्यज्जित किया है।

(ख) विषयीनिष्ठ अथवा व्यक्तिनिष्ठ सौन्दर्य – कतिपय विचारकों के अनुसार प्रेम वस्तु में न होकर द्रष्टा के भीतर रहता है। द्रष्टा की दृष्टि एवं रूचि के अनुकूल ही कोई वस्तु सुन्दर अथवा असुन्दर लगती है। प्रकृति अपने आप में न सुन्दर है न असुन्दर, वरन् द्रष्टा की दृष्टि–शक्ति एवं कल्पना–शक्ति के कारण ही वह सुन्दर प्रतीत होती है। कल्पना विहीन व्यक्ति शकुन्तला या पार्वती के सौन्दर्य में भी सुन्दरता के दर्शन नहीं कर सकता। सौन्दर्य–दर्शन के लिए दुष्यन्त की दृष्टि होनी चाहिए।

महाकवि कालिदास के सौन्दर्य–शास्त्र में रूचि का एक विशिष्ट स्थान है। रूचि तत्त्व सौन्दर्य को वस्तुनिष्ठ नहीं मान कर आत्मनिष्ठ बना देता है। यही कारण है कि विश्व की अनिन्द्य सुन्दरी पार्वती का कायिक सौन्दर्य भगवान शंकर को नहीं लुभा सका। महाकवि की दृष्टि में स्त्रियों का सौन्दर्य–शृंगार तभी सफल होता है जब वह अपने प्रियतम के नयनों का प्रसाद पा सके–

आत्मानमालोक्य चशोभमानमा दर्शाबिम्बे स्तिमितायताक्षी।
हरोपयाने त्वरित बभूब स्त्रीणां प्रियलोकफलोहिवेयः।। [5]

द्रष्टा की रूचि के अनुरूप ही कोई वस्तु सुन्दर या असुन्दर होती है। जैसे दही मीठा है, मधु मीठा है, अंगुर मीठा है, और मिश्री मीठी है, परन्तु जिसका मन इनमें से जिसमें रम जाय उसके लिए वही मीठा है–

दधि मधुरं मधु मधुरं द्राक्षा माधुरा सिताऽपि मधुरैव।
तस्य तदेव हि मधुरं यस्य मानो यत्र संलग्नम्।। [6]

विषकीट के लिए अंगूर नहीं वरन् विष भी मीठा ही है। महाकवि श्रीहर्ष का कहना है कि अति सुन्दर युवती का रूप युवक को आकर्षित करता है, बालक को नहीं –

यथा यूनस्तद्वत्परमरणीयऽपि रमणी।
कुमाराणामन्तः करणहरणं नैव कुस्ते।। [7]

रघुवंश में भी वर्णन मिलता है कि एक से एक राजा स्वयंवर में पधारे थे, फिर भी इंदुमती ने अज को ही वरण किया। अस्तु, स्पष्ट है कि सौन्दर्य व्यक्तिनिष्ठ है।

सौन्दर्य की उभयनिष्ठता

व्यवहारिक दृष्टि से विचार–चिंतन करने पर प्रतीत होता है कि ऊपर वर्णित दोनों मान्यताएं अपनी–अपनी सीमा में एकांगी हैं। वास्तविकता यह है कि सौन्दर्यानुभूति में वस्तु एवं आभ्यन्तर दोनों का समन्वय घटित होता है। बाहर से सुन्दर दिख पड़ने वाली वस्तु देखने के कुछ ही क्षण बाद हमारे अन्तःकरण में ऐसे घुल–मिल जाती है कि उसको अनुभूति से काट रक अलग नहीं किया जा सकता। उस समय वह वस्तु और वह अनुभूति दोनों का एकीकरण में सम्पादन हो जाता है। इस दृष्टि से सौन्दर्य उस वस्तु में तो रहता ही है, हमारे अन्तस् में भी विद्यमान हो जाता है, इस तरह सौन्दर्य उभयनिष्ठ बन जाता है। तथा भौतिकवादियों की स्थूल दृष्टि एवं प्रत्ययवादियों की सूक्ष्म दृष्टि दोनों में समन्वय स्थापित हो जाता है। इसी कारण आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने विषय एवं विषयी को लेकर चलने वाले विवाद को भाषा का गड़बड़ झाला बताया है। उनका कहना है कि 'जिस तरह वीर कर्म से पृथक् वीरत्व कोई पदार्थ नहीं है, वैसे ही सुन्दर–वस्तु से अलग कोई पदार्थ नहीं है। भीतर बाहर का भेद व्यर्थ है, जो भीतर है वहीं बाहर है। [8]

प्रेम की वेदना से व्यथित सौन्दर्य

महाकवि कालिदास का सौन्दर्य–विधान प्रणय की वेदना से सिक्त एवं विरह की व्यथा से व्यथित रहा है। वस्तुतः वेदना के तार जब झनझनाते हैं तब गीत फुटते हैं–

अधर पर मुस्कुराहट है नयन से नीर बहता है।
हृदय की हूक हंस पड़ती उसे जग गीत कहता है।। [8]

महाकवि वाल्मीकि का शोक श्लोक में परिणत हो छलक पड़ा। करूणा एवं वेदना की गहरी ठेस से ऋषि के अन्तःकरण में सोया हुआ कवि जग उठा। और, आदिकवि की वह वेदना उनकी आदि काव्य रामायण का कारण बन गयी और काव्य की दृष्टि से उनका यह काव्य महाकाव्य के रूप में संसार का शिरोमणि बना हुआ है–

मा निषाद् प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वती समाः।
यत्क्रौंच मिथुनादेकमधीः काममोहितम्।। [9]

महाकवि कालिदास की शकुन्तला का हृदय अपने प्रियतम से

मिलने के कातर लालसा में जग उठता है। अपने इष्ट जन के विरह में उसके प्राण रो उठते हैं, उसको लगता है कि प्राण को प्रणय की ओर कोई खींच रहा है।–

रम्याणि वीक्ष्य मधुरांश्च निशम्य शब्दान्
पर्युत्सुको भवति यत सुखितोऽपि जन्तुः।
तच्चेतसा स्मरित नूनमबोध पूर्व
भावस्थिराणि जननान्तरसौहृदानि।। [10]

'कालिदास ने प्रणय के सम्भोग सुख का विस्तार के साथ बेहिचक वर्णन किया है। इनकी दृष्टि में रति–सुख गर्हित नहीं है। यह स्वस्थ जीवन का स्वस्थ प्रकार है। सभी देवताओं में सबसे सुन्दर काम और सभी व्यापारों में सबसे रमणीय रति है। काम और रति की प्रणय–लीला जीवन का, एक अविच्छिन्न अंग है जिसे जीवन और जगत् से प्यार है, रूप और यौवन के प्रति आकर्षण है, वह सम्भोग सुख को मिथ्या और अश्लील कह कर अपने को धोखा नहीं दे सकता। और तो और शिव–पार्वती के विहार का भी स्पष्ट वर्णन करने मे महाकवि नहीं चूके। कुमारसंभवम् का अष्टम सर्ग इसका उदाहरण है। रघुवंश का अन्तिम सर्ग राजा अग्निवर्ण के भोग–विलास से भरा पुरा है। लेकिन इस सौन्दर्य संयोग के कोलहाल के बीच तपःपूत प्रेम की दिव्य झंकार भी हमें सुनाई पड़ती है।' [11]

सौन्दर्य–सुधा के पान से प्रेमी का मन कभी तृप्त नहीं होता, क्योंकि प्रेमी जब अपने प्रिय या प्रेयसी के सौन्दर्य का रसपान करने लगता है तो उसका मन अघाता ही नहीं हैं, थकता ही नहीं है। वस्तुतः सौन्दर्य थकता नहीं है। सौन्दर्य में तृप्ति का आना जड़ता के आने जैसा है। महाकवि कालिदास की दृष्टि में सौन्दर्य नित नवीन है। सौन्दर्य का सम्बन्ध देखने वाले के कल्पना–संसार से हो जाता है। अस्तु, प्रेम की नवीन उद्भावनाओं के कारण प्रिय की प्रियता गाढ़ी होती जाती है। प्रेम में पगा हुआ और सौन्दर्य में सना हुआ मनुष्य कभी कठोर नहीं हो सकता। प्रेम व्यक्ति को कोमल एवं उदारमना बना देता है। प्रेम का व्यापार चराचर प्रकृति के बीच सदा–सर्वदा से चलता आ रहा है। प्रकृति पुरूष के प्रेम में सदा विहल रहती है उसी तरह पुरूष प्रकृति के प्रेम में व्याकुल। सौन्दर्य शाश्वत, सतत्, सलोने शिव–तत्त्व की भांति सर्व व्याप्त एवं चिरन्तन भी है। सरस सौन्दर्य के संयोग से प्रेम की उत्पत्ति होती है। सौन्दर्य और प्रेम में न सुख है और न दुःख वरन् वहां शाश्वत् सतत् अनुपम, आनन्द का चिरविलास है। शिव के वरण से सुन्दरता का रूप लोक मंगलकारी हो जाता है।

मेघदूत में वर्णित यक्ष की विरह–वेदना के साथ–साथ यक्ष–पत्नी के सौन्दर्य का वर्णन भी अति मनोहारी दीख पड़ती हैं उसके रूप विश्लेषण के क्रम में कवि कहता है कि वह कृशांगी है, श्याम रंग की सलोनी सुकुमारी है। उसकी दन्त पंक्ति अति नुकीली एवं होठ लाल बिम्ब के समान हैं। उसका शरीर मध्य में पतला है। उसके कटाक्ष हरिणी के नेत्रों से स्पर्धा करती हैं। उसकी नाभि गंभीर है, और नितम्ब भार से उसकी चाल मंथर है–

तन्वी श्यामा शिखरिदशना पक्कबिम्बाधरोष्ठी
मध्ये क्षामा चकितहरिणी प्रेक्षण निम्ननाभिः।
श्रोणीभारादलसगमना स्तोकनम्रास्तनाभ्यां
या तत्र स्याद्युवतिविषये सृष्टिराद्येव धातुः।। [12]

यहां कालिदास ने युवती का रूपांकन सरल प्रकृत पद्धति में किया है। यक्ष–पत्नी स्तनभार से आगे की ओर झूक यगी है जिससे उसके सौन्दर्य में चार चांद लग रहा है–

यत्रावश्यं वलयकुलिशोद्घट्टनोद्गीर्णतोयं
नेष्यन्ति त्वां सुरयुवतयो यन्त्रधारागृहत्वम्। [13]

कुमारसंभवम् की पार्वती की भी ठीक यही स्थिति है। कालिदास ने पार्वती के यौवन की रमणीयता के लिए इसका बारम्बार उल्लेख किया है–

सा राजहंसैरिव संन्ताडगी गतेषु लीलाञ्चितविक्रमेषु। [14]

अभिज्ञानशाकुन्तलम् की शकुन्तला ती तन्वी है–

इयमधिकमनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी।

भोजपुरी भाषा के महान् कवि डॉ0 श्रीनिवास तिवारी 'मधुकर' का यक्ष भी अपनी प्रेयसी के पास मेघ को दूत बनाकर संदेश भेजता है–

जाहु जाहु तूहूं भईया हो विदेशे जाहूं।
ले ले जाहू प्रिय के संदेशवा बदरिया।।
प्रिय बिनू जियरा पपीहरा बदरिया। [15]

वस्तुतः प्रेमियों द्वारा अपनी पावन प्रेयसियों के पास विरह वेदना से विगलित आंसुओं का हार ही उपहार में भेजते समय उनके सौन्दर्य का भी बड़े ही अनोखे ढ़ंग से वर्णन किया गया है। तन्वी अर्थात् छरहरी काया रमणियों के सौन्दर्य में सरसता प्रदान करती है। वास्तव में हल्का शरीर हर दृष्टि से सुन्दर होता है। साहित्य जगत् में रमणियों की सुन्दरता के लिए उनका तन्वी होना अनिवार्य माना गया है, अस्तु महाकवि वाल्मीकि ने भी सौन्दर्य की प्रतिमुर्ति सीता को भी तन्वी कहा है–

सा प्रकृत्यैव तन्वंगी तद्वियोगाच्च कर्शिता। [16]

सुन्दरी रमणी की दन्त पंक्ति नुकीली होती है। दाडिम, मोती, कुन्द, कली आदि से दांत की उपमा न देकर 'शिखरी दशना' कहा गया है। लाल–लाल अधरों की अनुपम बिम्ब फल से देना उत्तम है। अलका की प्रत्येक युवती बिम्बाधरा हैं–

नीवीबन्धोच्छवसितशिथिलं यत्र बिम्बाधराणां। [17]

प्रेमिका वियोग में विलखता पुरूरवा कृष्णसार मृग से अपनी प्रेयसी का पता पूछते समय उसके सौन्दर्य का भी वर्णन करता है–

सुरसुंदरी जहणभरालस पीणुत्तुंग घणत्थणी
थिरजोव्वण तणुसरीरि हंसागई गअणुज्जल काण्णें मिअलोणि भमंती
दिट्टी पइं तह विरह समुद्दंतरें उत्ताराहि मइं।। [18]

विश्व की अनिन्द्य सुन्दरी पार्वती के सलिल सौन्दर्य का चारूमय चित्रण करते हुए महाकवि कहते हैं कि पार्वती के मनोहर भैं हैं अंजन शलाका में श्यामता सुहाग की भांति लग रही है। उन्हें अवलोकन कर कामदेव ने भी अपने धनुष के सौन्दर्य का अहंकार त्याग दिया है–

तास्याः शलाकाञ्जननिर्मितेव कान्तिभ्रुंवीरायलेखयोर्या।
तां वीक्ष्य लीलाचतुरामनङ्ग : स्वचापसौन्दर्यमदं मुमोच।। [19]

वैदिक काल से आज तक 'स्तोकनम्रता' युवती की गरिमा की परिचायिका रही है। महाकवि कालिदास ने भी युवती की इस आङ्गिक सौन्दर्य का निरूपण किया है। सीता के विरह में तड़पते हुए रघुवंश के श्रीराम कहते हैं कि हे सीते! तुम्हारे वियोग में मैं

ऐसा पागल हो गया था कि एक दिन स्तन के समान गुच्छों वाली इस पतली अशोक लता को ही गले लगा लिया था क्योंकि मुझे लगा था कि तुम्हीं हो। लेकिन मेरे छोटे भाई लक्ष्मण ने रोते हुए मुझको हटा दिया–

इमां तटांशोकलतां य तन्वीं स्तनाभिरामस्रबकाभिनम्राम।
त्वप्राप्तिबुद्धया परिब्धुकामः सौमित्रिणा साश्ररहं निषिद्धः।। [20]

महाकवि के 'कुमारसंभवम्' महाकाव्य के प्रथम संर्ग में सौन्दर्य–रस की सुषसा छलक रही है, लेकिन वह पांचवें सर्ग में तप की कठिन अग्नि में तपकर पावन बन जाने के बाद ही प्रेमास्पद के लिए पेय हो पाती है। अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के तृतीय अंक में जिस संभोग श्रृंगार का वर्णन प्राप्त होता है जो इतना अधिक मादम है कि उसको स्थिरता प्रदान करने के लिए महाकवि ने उसे तपस्या की आंच में तपाया है।

वस्तुतः प्रेम एवं सौन्दर्य के रूप में मंगलमय विभु का पाकर उकसे रसमय एवं मधुमय मिलन तथा रसमय विरह में मानव की सम्पूर्ण वासनाएं और आकांक्षाएं स्वयं को समाहित कर देती हैं। प्रेम के माधुर्यमय आकर्षण में मुग्धा रमणीया राधा को बांधकर जीवन पर्यन्त तड़पने के लिए छोड़कर छलिया कृष्ण चले जाते हैं। कण्व के आश्रम में लापरवाह शकुन्तला को प्रेम–पीर के तीर से घायल कर दुष्यन्त अपनी भुजाओं में बांध लेता है और पुनः वह उसी शकुन्तला को गर्भवती रहने के बावजूद भरी सभा में पहचानने से इन्कार कर देता है। स्त्री सुलभ चपलता से युक्त चंचल सती ने श्रीराम के विषय में शिव से पूछा और श्रीराम की परीक्षा ले ली। इसी अपराध में शिव ने उसे युग–युग तक परित्याग कर दिया। अग्नि के मध्य अपनी परीक्षा देने के बावजूद गर्भवती सीता को भी निर्वासित होना पड़ा। अल्हड़ गोपियों एवं राधा, पार्वती एवं सीता, शकुन्तला एवं उर्वशी की जो मोहक मूर्तियां हमारे काव्य के चिर निधि हैं, साहित्य में समाहित प्रेम–वेदना की सौन्दर्य को प्रख्यापित करती हैं।

निष्कर्षतः कालिदास ने तार्किक प्रेम प्रसंगों के आधार पर प्रेमत्त्व और प्रेम की मीमांसा भी की है। कालिदास की रचनाओं में प्राकृतिक प्रेम की भावना तथा शृंगार वर्णन का संगंम है। दाम्पत्य प्रेम को कालिदास ने सच्चा प्रेम बतलाते हुऐ उसे कर्तव्यनिष्ठ एवं उदात्त–भाव वाला बतलाया है। वस्तुतः प्रेम और विरह का अन्योन्याश्रय संबंध है।

संदर्भ

1. संस्कृत साहित्य का इतिहास– पृष्ठ 223–324
2. वहीं पृ0 326
3. कालिदास की प्रेम भावना, पृ0 183
4. कालिदास की प्रेम भावना, पृ0 185
5. कालिदास की प्रेम भावना, पृ0 186
6. वहीं
7. कुमारसंभवम्– 7/22
8. कालिदास की प्रेम भावना, पृ0187
9. नैषधचरितम्– 22/252
10. चिन्तामणि (आचार्य रामचन्द्र शुक्ल), प्रथम भाग– 131
11. डॉ0 श्रीनिवास तिवारी 'मधुकर'
12. रामायण, बालकाण्ड– 2/15
13. कालिदास के सौन्दर्य सिद्धान्त (आचार्य शिवबालक राय), पृ0 12–13
14. मेघदूतम्– 2/19
15. मेघदूतम्– 1/61
16. कुमारसंभवम्– 1/34
17. अभिज्ञानशाकुन्तलम्– 2/19
18. काव्य सुधासंजीवनी
19. रामायण, सुन्दरकाण्ड– 59/31
20. वहीं